

योएल का ग्रंथ और लाओदीकियाई सेवेंथ-डे ऐडवेंटिस्ट कलीसिया - संख्या छत्तीस

Jeff Pippenger

2026-01-27

संख्या छत्तीस

'हलचल'—जिसे जेम्स वाइट 22 अक्टूबर, 1844 के पश्चात् मिलराइटों के बिखराव के रूप में अभिहित करते हैं—के बीच, विलियम मिलर ने 1847 में एक स्वप्न देखा, और दो वर्ष बाद उनका देहावसान हो गया।

यदि विलियम मिलर तीसरे संदेश का प्रकाश देख पाते, तो बहुत-सी बातें, जो उसे अंधकारमय और रहस्यमय प्रतीत होती थीं, स्पष्ट कर दी जातीं। परन्तु उसके भाइयों ने उसके प्रति इतना गहरा प्रेम और रुचि प्रकट की कि उसे लगा कि वह उनसे अलग नहीं हो सकता। उसका हृदय सत्य की ओर झुकता, और तब वह अपने भाइयों की ओर देखता; वे सत्य का विरोध करते। क्या वह उनसे अलग हो सकता था जिन्होंने यीशु के आगमन का प्रचार करते हुए उसके साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहे थे? वह सोचता था कि वे निश्चय ही उसे भटकने नहीं देंगे।

परमेश्वर ने उसे शैतान की सामर्थ्य और मृत्यु के प्रभुत्व के अधीन पड़ने की अनुमति दी, और जो लोग उसे निरंतर सत्य से दूर खींच रहे थे, उनसे उसे कब्र में छिपा दिया। मूसा ने, जब वह प्रतिज्ञा की हुई भूमि में प्रवेश करने ही वाला था, त्रुटि की। इसी प्रकार, मैंने देखा कि विलियम मिलर ने, जब वह शीघ्र ही स्वर्गीय कनान में प्रवेश करने वाला था, यह त्रुटि की कि उसने अपने प्रभाव को सत्य के विरुद्ध जाने दिया। अन्य लोगों ने उसे इस स्थिति तक पहुँचाया; इसके लिए उन्हीं को लेखा देना होगा। परन्तु स्वर्गदूत परमेश्वर के इस दास की बहुमूल्य धूल पर निगरानी रखते हैं, और वह अंतिम तुरही की ध्वनि पर बाहर आएगा।

एक दृढ़ अधिष्ठान

"मैंने एक समूह देखा जो भली-भाँति सतर्क और अडिग खड़ा था, और जो उस समुदाय की स्थापित आस्था को विचलित करने वालों को तनिक भी समर्थन नहीं देता था। परमेश्वर ने उन्हें प्रसन्नता की दृष्टि से देखा। मुझे तीन पायदान दिखाए गए—पहला, दूसरा, और तीसरा स्वर्गदूत संदेश। मेरे सहचर स्वर्गदूत ने कहा, 'हाय उस पर जो इन संदेशों के किसी पत्थर को हिलाए या किसी कील को भी हिला दे। इन संदेशों की सच्ची समझ परम महत्त्व की है। आत्माओं का भाग्य इस बात पर टिका है कि इन्हें किस प्रकार ग्रहण किया जाता है।' मुझे फिर इन्हीं संदेशों के द्वारा ले जाया गया, और मैंने देखा कि परमेश्वर की प्रजा ने अपना अनुभव कितनी भारी कीमत देकर अर्जित किया था। वह बहुत-से दुःख और भीषण संघर्ष के द्वारा प्राप्त हुआ था। परमेश्वर ने उन्हें चरण-दर-चरण अग्रसर किया, जब तक कि उसने उन्हें एक ठोस, अचल मंच पर स्थापित न कर दिया। मैंने देखा कि कुछ व्यक्ति उस मंच के निकट आए और उसकी नींव की जाँच-पड़ताल की। कुछ ने आनन्द के साथ तुरंत उस पर चढ़कर खड़े हो गए। अन्य ने उसकी नींव में दोष निकालना प्रारम्भ किया। वे चाहते थे कि उसमें कुछ सुधार किए जाएँ, तब मंच अधिक सिद्ध हो जाएगा और लोग बहुत अधिक प्रसन्न होंगे। कुछ लोग उसे परखने के लिए मंच से उतर पड़े और घोषित किया कि वह गलत रीति से डाला गया है। परन्तु मैंने देखा कि लगभग सब मंच पर दृढ़ खड़े रहे और जिन्होंने उतर कर शिकायतें की थीं, उन्हें अपनी शिकायतें छोड़ देने को समझाया; क्योंकि परमेश्वर ही प्रधान निर्माणकर्ता था, और वे उसी के विरुद्ध लड़ रहे थे। उन्होंने परमेश्वर के अद्भुत कार्यों का वर्णन किया, जिनके द्वारा वह उन्हें उस दृढ़ मंच तक ले आया था, और एकजुट होकर उन्होंने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाई और ऊँचे स्वर से परमेश्वर की महिमा की। इसका प्रभाव उन में से कुछ पर पड़ा जो शिकायत करते हुए मंच से उतर गए थे, और वे विनम्र भाव से फिर उस पर चढ़ आए।" Early Writings, 258.

मिलर के अद्भुत कृत्य

विलियम मिलर के "अद्भुत कार्य" से उस "दृढ़ नींव" की स्थापना हुई जो "सुदृढ़, अचल मंच" थी। "अचल मंच" की "नींव", तथा "मंच" और "नींव" दोनों—जो 1849 में मिलर की मृत्यु के पश्चात प्रवर्तित किए गए थे—पर हुआ पश्चातवर्ती आक्रमण, उनके स्वप्न में पहचाना गया है।

विलियम मिलर एडवेंचरवाद के आधारों के प्रतीक हैं।

वह 1798 से 1863 तक के मिलरवादी इतिहास का भी प्रतीक है।

वह 1798 से 1844 पर्यन्त मिलराइट इतिहास का भी प्रतीक है।

वह 1798 से लेकर रविवार के कानून तक तीन स्वर्गदूतों के इतिहास का भी प्रतीक है।

उसका प्रतिनिधित्व 1798 से 1844 पर्यन्त के छियालिस वर्षों द्वारा किया जाता है।

वह 2,520 तथा 2,300 के संबंध में संख्या "220" द्वारा निरूपित है।

वह "सात काल"—2,520— द्वारा निरूपित है।

वह 2,300 द्वारा निरूपित है।

मिलर के दो स्वप्नों का प्रतिरूप नबूकदनेस्सर के वे दो स्वप्न थे जो दानिय्येल की पुस्तक के अध्याय दो और अध्याय चार में वर्णित हैं।

1798 का कालखंड नबूकदनेस्सर से आरंभ होता है और 1863 में बेलशस्सर के साथ समाप्त होता है।

1798 से रविवार के कानून तक का काल नबूकदनेस्सर से आरंभ होता है और बेलशस्सर पर समाप्त होता है।

मिलेराइटों के इतिहास के प्रतीक के रूप में, वह उन नींवों का प्रतीक है, जो 2,520 की आल्फा-खोज और 2,300 की ओमेगा-खोज के बीच खोजे गए सत्यों का प्रतिनिधित्व करती हैं। विलियम मिलर के स्वप्न पर टिप्पणी करते हुए, जेम्स व्हाइट ने यह पहचाना कि वह "कुंजी" मिलर की बाइबल-अध्ययन की पद्धति थी। वह पद्धति ही "दाऊद की कुंजी" है, जो मिलर के कंधे पर रखी गई थी, क्योंकि उन्होंने 2300 वर्षों की भविष्यवाणी प्रस्तुत की, जो 22 अक्टूबर, 1844 को यशायाह 22:22 की पूर्ति होने पर समाप्त हुई।

2023 से आगे जिन सत्यों पर लगी मुहर खुलनी आरंभ हुई, वे वही सत्य हैं जिन्हें हबक्कूक की तालिकाएँ 95 प्रस्तुतियों में पहले ही पहचाने जा चुके थे, और वे सत्य अब 'सत्य' के एक नए ढाँचे के भीतर स्थापित किए जा रहे हैं।

जुलाई 2023 में बियाबान में पुकारनेवाले की वाणी के आह्वान ने यह इंगित किया कि 18 जुलाई 2020 की घोषणा के विषय में जिन्हें पश्चाताप करना था, उनके लिए रोना और विलाप आवश्यक ठहराए गए। जो बुद्धिमान कुँवारियों में होने वाले थे, उन्हें दानिय्येल अध्याय 9 की प्रार्थना के अनुरूप पश्चाताप करना था, जो लैव्यव्यवस्था 26 में उन जनों की प्रार्थना है जो यह स्वीकार करते हैं कि वे तित्तर-बित्तर कर दिए गए हैं।

जब मिलर कहते हैं, "जब मैं इस प्रकार अपनी महान हानि और उत्तरदायित्व के कारण रो रहा था और विलाप कर रहा था, तब मैंने परमेश्वर को स्मरण किया और आकुल होकर प्रार्थना की कि वह मुझे सहायता भेजे। तत्क्षण द्वार खुल गया, और एक पुरुष कमरे में प्रवेश किया, और उसी समय वहाँ उपस्थित सब लोग बाहर चले गए; और उसके हाथ में धूल झाड़ने का ब्रश था; उसने खिड़कियाँ खोल दीं और कमरे की धूल-मिट्टी तथा कूड़ा-कर्कट झाड़कर बाहर निकालने लगा।"

जब उसने "सहायता" के लिए "गंभीरता से प्रार्थना की," तब जो द्वार खुला, वह मिलर का हृदय था। लाओदिकिया के प्रति सच्चे साक्षी के रूप में यीशु प्रवेश चाहते हुए हृदयों के द्वार पर दस्तक दे रहे हैं। जब वह द्वार खुला, तो एक

पृथक्करण की प्रक्रिया आरम्भ हुई। जब वह द्वार खुला, तो "खिड़कियाँ" भी खुल गई, और वे "खिड़कियाँ" स्वर्ग की खिड़कियाँ हैं।

प्रकाशितवाक्य के उन्नीसवें अध्याय में यूहन्ना ने देखा कि स्वर्ग की खिड़कियाँ खुल गई, जब दुल्हन के अपने आपको तैयार कर लेने के तुरन्त बाद प्रभु ने अपनी श्वेत-अश्व सेना को उठाया। वही सेना यहजेकेल की वह सेना है, जो कठोर पूर्वी पवन के संदेश के प्रत्युत्तर में उठ खड़ी होती है। वही सेना विजयी कलीसिया है, जो गेहूँ और जंगली घास का पृथक्करण सम्पन्न हो जाने पर युद्धरत कलीसिया से विजयी कलीसिया में रूपान्तरित हो जाती है। उस पृथक्करण को लाओदीकिया की अवस्था से फिलादेल्फिया की अवस्था में परिवर्तन के रूप में भी निरूपित किया गया है। मिलर ने अपना हृदय खोला और सच्चे साक्षी को भीतर प्रवेश करने दिया; उसने गेहूँ और जंगली घास को अलग किया, और इस प्रकार अपनी श्वेत-अश्व सेना को जीवित कर उठाया।

31 दिसम्बर, 2023 को लोगों के चले जाने के बाद धूल झाड़ने वाला व्यक्ति कक्ष में प्रविष्ट हुआ, और त्रुटि का कूड़ा-कर्कट हटाने का कार्य प्रारम्भ किया, साथ ही हबक्कूक की तालिकाओं के पुराने सत्यों को सत्य के एक नए ढाँचे में स्थापित करने लगा।

उद्धारकर्ता उन बातों को रद्द करने नहीं आए थे जो पितृपुरुषों और भविष्यद्वक्ताओं ने कही थीं; क्योंकि उन्हीं प्रतिनिधि पुरुषों के द्वारा वे स्वयं बोले थे। परमेश्वर के वचन की सारी सच्चाइयाँ उसी से आईं। परन्तु ये अमूल्य रत्न गलत संदर्भों में रख दिए गए थे। उनके अनमोल प्रकाश को भ्रम की सेवा में लगा दिया गया था। परमेश्वर चाहता था कि उन्हें भ्रम के उन संदर्भों से निकालकर सत्य के ढाँचे में फिर से स्थापित किया जाए। यह कार्य केवल एक दिव्य हाथ ही कर सकता था। भ्रम के साथ अपने संबंध के कारण, सत्य परमेश्वर और मनुष्य के शत्रु के उद्देश्य की सेवा कर रहा था। मसीह उसे वहाँ रखने आए थे जहाँ वह परमेश्वर की महिमा करे, और मानवता के उद्धार के लिए कार्य करे। *The Desire of Ages*, 287.

2024 में सिखाए गए प्रथम सत्यों में से एक 18 जुलाई, 2020 की निराशा का स्पष्टीकरण था। रेखा पर रेखा यह पहचाना गया कि प्रत्येक सुधार-रेखा की पहली निराशा ने, दस कुँवारियों के दृष्टान्त में, 18 जुलाई, 2020 को एक प्राथमिक मार्गचिन्ह के रूप में चिह्नित किया। निराशा का विषय पवित्रस्थान के सत्य को उद्धाटित करने की "कुंजी" बन गया; जबकि 1844 की महान निराशा में, पवित्रस्थान वही "कुंजी" था जिसने उस निराशा को उद्धाटित किया।

धूल झाड़ने वाला पुरुष, जो यहूदा के गोत्र का सिंह भी है, ने 2023 में मध्यरात्रि की पुकार के संदेश की मुहर खोलना प्रारम्भ किया। हम अब मिलर के स्वप्न के उस बिंदु पर पहुँच गए हैं, जहाँ वह मेज़ पर बड़ी पेटिका रख रहा है और उन सत्यों को उसमें डाल रहा है, जो सूर्य से दस गुना अधिक चमकने के लिए नियत हैं। उन्हीं रत्नों में से एक, भविष्यवाणी-वृत्तांत में उसकी पहचान का प्रकाशन है।

जब भविष्यवाणी की मुहर खोली जाती है, तब वह यहूदा के गोत्र का सिंह होता है, जो पुरानी सच्चाइयों को लेकर उन्हें "सत्य" के तीन चरणों के एक नए ढाँचे में स्थापित करता है। वह ढाँचा मसीह—जो अल्फा और ओमेगा, प्रथम और अन्तिम हैं—के द्वारा एकसूत्र में बँधा रहता है। परमेश्वर के वचन के रूप में, उन्होंने अपने वचन के प्रत्येक तत्त्व का समन्वय किया। पाल्मोनी के रूप में, उन्होंने गणित के प्रत्येक पहलू का विन्यास किया।

जब पतरस तीसरे पहर कैसरिया फिलिप्पी में होता है, वह स्वयं को 'पल्मोनी' के रूप में प्रकट करता है, और 'भविष्यवाणी फ्रैक्टल' पर विशेष बल देता है। भविष्यवाणी के प्रभु के रूप में मसीह के अन्तिम प्रकाशनों में से एक यह है कि पतरस द्वारा मत्ती 16:18 में प्रदर्शित 'भविष्यवाणी फ्रैक्टल' पर बल दिया गया है, जो 1.618 का प्रतीक है, जिसे प्राकृतिक जगत में 'स्वर्ण अनुपात' कहा जाता है, किन्तु पल्मोनी द्वारा इसे 'भविष्यवाणी फ्रैक्टल' कहा जाता है।

27 से 34 के पवित्र सप्ताह के भीतर स्थित भविष्यवाणीगत फ्रैक्टलों की पहचान हमने अभी केवल आरम्भ ही की है। योएल की पुस्तक की ओर अग्रसर होते हुए वहाँ पुनः लौटने से पहले, मिलर के स्वप्न के हमारे विवेचन में

भविष्यवाणीगत फ़ैक्टलों पर विशेष बल को जोड़ा जाना आवश्यक था।

मिलर का लोगों को “आओ और देखो” कहकर बुलाना, और मसीह का “मिट्टी झाड़ने वाले व्यक्ति” के रूप में मिलर को “आओ और देखो” कहकर बुलाना—इन दोनों को समेटने वाला काल 1798 से लेकर रविवार के कानून तक है; परन्तु उसी समग्र इतिहास के भीतर 1798 से 1863 तक का एक फ़ैक्टल निहित है। उसमें 9/11 से रविवार के कानून तक का एक और फ़ैक्टल है, और 2023 से रविवार के कानून तक का एक और।

कोलाहल के बीच जब मिलर ने अपनी आँखें बंद कीं, तो उसने 1849 के उस इतिहास का प्रतिनिधित्व किया, जब प्रभु कार्य को पूर्ण करने का प्रयत्न कर रहे थे, परंतु वह प्रयत्न निष्फल रहा। वह 2023 में पुनरुत्थित हुआ, क्योंकि वह एलिय्याह है जिसका वध मूसा के साथ सड़क पर किया गया था। उसकी मृत्यु 1849 में हुई, और फिर 18 जुलाई, 2020 को वह पुनः मृत्यु को प्राप्त हुआ।

उन्हें 1847 में एक स्वप्न प्रदान किया गया; तब प्रभु ने दूसरी बार अपना हाथ बढ़ाया और 1850 का चार्ट प्रकाशित किया। जब एक लाख चवालीस हजार के इतिहास में प्रभु दूसरी बार अपना हाथ बढ़ाते हैं, तब मिलर का पुनरुत्थान होता है।

इस्त्राएल और यहूदा, दोनों के तितर-बितर होने का प्रारम्भ-बिंदु यशायाह में प्रतिपादित है।

क्योंकि सीरिया का सिर दमिश्क है, और दमिश्क का सिर रज़ीन है; और पैसठ वर्ष के भीतर एप्रैम ऐसा तोड़ दिया जाएगा कि वह प्रजा न रहेगा। और एप्रैम का सिर सामरिया है, और सामरिया का सिर रमल्याह का पुत्र है। यदि तुम विश्वास न करोगे, तो निश्चय ही स्थिर न रहोगे। यशायाह 7:8, 9.

यह भविष्यवाणी 742 ईसा पूर्व में दी गई; और उन्नीस वर्ष बाद, 723 ईसा पूर्व में, असीरियों ने इस्त्राएल को तितर-बितर कर दिया; और फिर छियालिस वर्ष बाद यहूदा को बाबुल ने तितर-बितर कर दिया। ये तीनों दिनांक पहले उन्नीस वर्षों की अवधि, और उसके पश्चात छियालिस वर्षों की अवधि को दर्शाते हैं। जब वे दोनों भविष्यवाणियाँ क्रमशः 1798 और 1844 में समाप्त हुईं, तब 742 ईसा पूर्व से 723 ईसा पूर्व तक आरंभ की उन्नीस-वर्षीय अवधि ‘अल्फ़ा’ उन्नीस वर्ष थी, जो 1844 से 1863 तक के ‘ओमेगा’ उन्नीस वर्षों का प्रतिनिधित्व करती थी।

ओमेगा के उन्नीस-वर्षीय काल में पाँच वर्ष बीतने पर मिलर की मृत्यु हुई, और सात वर्ष बाद हाइरम एडसन के "seven times" पर लेख प्रकाशित हुए। सात वर्ष बाद "seven times" को अस्वीकार कर दिया गया। 1856 में वह मोहरबंदी होनी थी जो 1863 के रविवार-कानून से पहले होती, परंतु ऐसा होना न था।

तीसरे स्वर्गदूत का आगमन 1844, 1888 और 9/11 के समय हुआ। बहन वाइट ने इंगित किया कि जब न्यूयॉर्क नगर के विशाल भवन ढह जाएँगे, तब प्रकाशितवाक्य के अठारहवें अध्याय के पहले तीन पदों की पूर्ति होगी।

इन बातों के बाद मैं ने एक और स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा, जिसके पास बड़ा अधिकार था; और पृथ्वी उसकी महिमा से प्रकाशित हो गई। और उसने बड़े बल के साथ ऊँचे स्वर में पुकार कर कहा, “बाबुल महान गिर पड़ा, गिर पड़ा, और दुष्टात्माओं का निवासस्थान हो गया है, और हर एक अशुद्ध आत्मा का ठिकाना, और हर एक अशुद्ध और घृणित पक्षी का पिंजरा। क्योंकि सब जातियों ने उसके व्यभिचार के क्रोध की दाखमधु पी है, और पृथ्वी के राजाओं ने उसके साथ व्यभिचार किया है, और पृथ्वी के व्यापारी उसकी विलासिता की प्रचुरता से धनी हो गए हैं।” और मैंने स्वर्ग से एक और शब्द सुना, जो कहता था, “हे मेरे लोगों, उसमें से बाहर निकल आओ, कि उसके पापों में सहभागी न बनो, और उसकी विपत्तियों में से तुम्हें कुछ न मिले। क्योंकि उसके पाप आकाश तक पहुँच गए हैं, और परमेश्वर ने उसकी अधर्मताओं को स्मरण किया है। जैसा उसने तुम को प्रतिफल दिया, वैसा ही तुम भी उसे प्रतिफल दो; और उसके कर्मों के अनुसार उसके लिये दूना दो। जिस प्याले को उसने भरा है, उसी में

उसके लिये दूना भरो। जितना उसने अपने को महिमा दी और विलासिता में रही, उतना ही उसे यातना और शोक दो; क्योंकि वह अपने मन में कहती है, 'मैं रानी बैठी हूँ, मैं विधवा नहीं, और मुझे शोक न होगा।' इस कारण उसकी विपत्तियाँ एक ही दिन में आएँगी—मृत्यु, और विलाप, और अकाल—और वह आग से पूरी रीति से जला दी जाएगी; क्योंकि प्रभु परमेश्वर, जो उसका न्याय करता है, सामर्थी है।" और पृथ्वी के राजा, जिन्होंने उसके साथ व्यभिचार किया और विलासिता की, जब उसकी जलने का धुआँ देखेंगे, तो उसके लिये विलाप और शोक करेंगे, और उसकी यातना के भय से दूर खड़े होकर कहेंगे, "हाय, हाय, वह महान नगर बाबुल, वह सामर्थी नगर! क्योंकि एक ही घड़ी में तेरा न्याय आ पहुँचा।" और पृथ्वी के व्यापारी उसके लिये रोएँगे और विलाप करेंगे, क्योंकि अब कोई उनका माल नहीं खरीदता: सोने और चाँदी का, और बहुमूल्य पत्थरों और मोतियों का; और मलमल का, और बैंगनी, और रेशम, और सुर्ख वस्त्रों का; और हर प्रकार की थायीन लकड़ी का; और हाथीदाँत के हर प्रकार के पात्रों का; और बहुमूल्यतम लकड़ी के हर प्रकार के पात्रों का, तथा पीतल, लोहे और संगमरमर के पात्रों का; और दालचीनी, और सुगंधद्रव्य, और मलहम, और लोबान का; और दाखमधु, और तेल, और मैदा, और गेहूँ का; और पशुओं, और भेड़ों, और घोड़ों, और रथों का; और दासों का, और मनुष्यों के प्राणों का। और जिन फलों की तेरी आत्मा लालसा करती थी, वे तुझ से दूर हो गए हैं, और जो सब वस्तुएँ स्वादिष्ट और मनोहर थीं, वे तुझ से दूर हो गई हैं, और तू उन्हें फिर कभी न पाएगी। इन वस्तुओं के व्यापारी, जो उससे धनी बने थे, उसकी यातना के भय से दूर खड़े होकर रोते और विलाप करते हुए कहेंगे, "हाय, हाय, वह महान नगर, जो मलमल और बैंगनी और सुर्ख वस्त्र पहने हुए थी, और सोने और बहुमूल्य पत्थरों और मोतियों से सजी हुई थी! क्योंकि एक ही घड़ी में ऐसी बड़ी दौलत नाश हो गई।" और हर जहाज़ का प्रधान, और जहाज़ों की सारी मंडली, और नाविक, और जितने समुद्र से व्यापार करते हैं, दूर खड़े हो गए, और जब उन्होंने उसके जलने का धुआँ देखा, तो चिल्ला कर कहा, "इस महान नगर के समान कौन सा नगर है!" और उन्होंने अपने सिरों पर धूल डाली, और रोते व विलाप करते हुए चिल्लाकर कहा, "हाय, हाय, वह महान नगर, जिसमें उसकी वैभवता के कारण समुद्र में जहाज़ रखने वाले सब लोग धनी बन गए थे! क्योंकि एक ही घड़ी में वह उजाड़ कर दी गई।" "हे स्वर्ग, और हे पवित्र प्रेरितो और भविष्यद्वक्ताओ, उसके ऊपर आनन्द करो; क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारा बदला उसी से लिया है।" तब एक पराक्रमी स्वर्गदूत ने चक्की के बड़े पाट के समान एक पत्थर उठाकर उसे समुद्र में फेंक दिया, और कहा, "इसी प्रकार बलपूर्वक वह महान नगर बाबुल पटक कर गिराया जाएगा, और वह फिर कभी बिलकुल न मिलेगा। और तेरे भीतर वीणावादकों, संगीतकारों, बाँसुरीवादकों, और तुरही बजाने वालों का स्वर फिर कभी न सुना जाएगा; और कोई कारीगर—वह चाहे किसी कला का हो—तुझ में फिर कभी न पाया जाएगा; और चक्की की ध्वनि तुझ में फिर कभी न सुनी जाएगी; और दीप का प्रकाश तुझ में फिर कभी न चमकेगा; और दूल्हे और दुल्हन का स्वर तुझ में फिर कभी न सुना जाएगा; क्योंकि तेरे व्यापारी पृथ्वी के बड़े लोग थे, क्योंकि तेरी टोना-विद्या से सब जातियाँ भरमाई गई।" और उसके भीतर भविष्यद्वक्ताओं और पवित्र जनों का, और पृथ्वी पर जितनों का वध किया गया, उनका सब का रक्त पाया गया।

पद एक—और इन बातों के बाद मैंने एक और स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते हुए देखा, जिसके पास महान सामर्थ था; और उसकी महिमा से पृथ्वी आलोकित हो गई।

पद दो— और उसने ऊँचे और प्रबल स्वर में पुकारकर कहा, "महान बाबुल गिर पड़ा है, गिर पड़ा है, और वह दुष्टात्माओं का निवासस्थान बन गया है, और हर एक अशुद्ध आत्मा का कारागार, और हर एक अशुद्ध और घृणित पक्षी का पिंजरा।"

पद तृतीय—क्योंकि सब जातियों ने उसके व्यभिचार के क्रोध का दाखमधु पिया है, और पृथ्वी के राजाओं ने उसके साथ व्यभिचार किया है, और पृथ्वी के व्यापारी उसके भोग-विलास की बहुतायत से धनवान हो गए हैं।

वह शक्तिशाली प्रथम स्वर्गदूत अपने हाथ में एक संदेश लिए उतर आया, और यूहन्ना को यह आज्ञा दी गई कि वह जाकर उस छोटी पुस्तिका को ले और उसे खा ले। वह प्रथम स्वर्गदूत वही कार्य करता है जो प्रकाशितवाक्य अठारह का स्वर्गदूत करता है, जो अपनी महिमा से पृथ्वी को आलोकित करता है। यह इसलिए है कि प्रथम स्वर्गदूत अल्फ़ा है और तृतीय स्वर्गदूत ओमेगा है, और आरंभ सदैव अंत का निरूपण करता है।

"यीशु ने एक शक्तिशाली स्वर्गदूत को यह आज्ञा दी कि वह पृथ्वी पर उतरकर पृथ्वी के निवासियों को चेतावनी दे कि वे उसके दूसरे आगमन की तैयारी करें। जैसे ही स्वर्गदूत स्वर्ग में यीशु की उपस्थिति से निकला, एक अत्यंत तेजस्वी और महिमामय प्रकाश उसके आगे-आगे चला। मुझे बताया गया कि उसका मिशन अपनी महिमा से पृथ्वी को आलोकित करना और मनुष्यों को परमेश्वर के आने वाले क्रोध की चेतावनी देना था।" प्रारंभिक लेखन, 245.

प्रथम स्वर्गदूत प्रकाशितवाक्य अठारह का प्रथम पद है।

और इन बातों के पश्चात् मैंने एक और स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा, जिसके पास महान सामर्थ्य था; और पृथ्वी उसकी महिमा से आलोकित हो गई।

दूसरा स्वर्गदूत प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह का दूसरा पद है।

और उसने बड़े सामर्थ्य के साथ प्रबल स्वर में पुकारकर कहा कि महान बाबुल गिर पड़ी है, गिर पड़ी है, और दुष्टात्माओं का निवासस्थान, हर एक अशुद्ध आत्मा का कारागार, और हर एक अशुद्ध और घृणित पक्षी का पिंजरा बन गई है।

तीसरा स्वर्गदूत प्रकाशितवाक्य के अठारहवें अध्याय का तीसरा पद है।

क्योंकि सब जातियों ने उसके व्यभिचार के क्रोध की दाखमधु पी है, और पृथ्वी के राजाओं ने उसके साथ व्यभिचार किया है, और पृथ्वी के व्यापारी उसके विलास की प्रचुरता से धनी हो गए हैं।

रविवार के कानून के समय, सभी राजा उस वेश्या के साथ व्यभिचार करते हैं, जैसा कि तीसरी आयत में पूर्वचित्रित है। दूसरे स्वर्गदूत का संदेश यह है कि बाबुल गिर पड़ा है, और वही दूसरी आयत है। पहले स्वर्गदूत का उद्देश्य अपनी महिमा से पृथ्वी को आलोकित करना था, और वही पहली आयत है। पहली आयत 9/11 है। दूसरी आयत वह पृथक्करण की प्रक्रिया है जो 9/11 से सम्पूर्ण मानवजाति में चल रही है, और तीसरी आयत रविवार का कानून है। इसी कारण, 9/11 तीसरे स्वर्गदूत का संदेश है, और रविवार का कानून भी तीसरे स्वर्गदूत का संदेश है। पहली तीन आयतों में जैसा निरूपित है, 9/11 आने वाले रविवार के कानून की चेतावनी है; और चौथी आयत की दूसरी वाणी रविवार का कानून है। प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह की पहली वाणी आने वाले रविवार के कानून की चेतावनी है, और वह चेतावनी रविवार के कानून के समय सजीव वास्तविकता में परिवर्तित हो जाती है।

9/11 से लेकर रविवार के कानून तक का काल, मिलर के स्वप्न में 'आओ और देखो' के अल्फ़ा से 'आओ और देखो' के ओमेगा तक के काल द्वारा पूर्वरूप में चित्रित है। 9/11 और रविवार के कानून के बीच, रत्न कक्ष के मध्य में स्थित मिलर की मेज़ पर रखे जाते हैं, बिखरे दिए जाते हैं और दबा दिए जाते हैं, तथा तत्पश्चात् धूल झाड़ने वाले मनुष्य द्वारा पुनर्स्थापित किए जाते हैं। 1840 में लघु पुस्तक के साथ जो स्वर्गदूत अवतरित हुआ, वह प्रथम और अल्फ़ा स्वर्गदूत था, जो 9/11 पर अवतरित हुए स्वर्गदूत का प्रतिनिधित्व करता था। उस स्वर्गदूत की पहचान अध्याय दस में की गई है, जब यूहन्ना से कहा जाता है कि वह पुस्तक मीठी होगी, परन्तु कड़वी हो जाएगी।

यूहन्ना पहले स्वर्गदूत के उस आंदोलन का प्रतिनिधित्व कर रहा था, जिसका प्रतिनिधित्व मिलेराइटों ने किया, और वह एक लाख चवालीस हज़ार के आंदोलन का भी चित्रण कर रहा था। सबसे पहले और प्रमुख रूप से, उसने अंतिम दिनों का प्रतिनिधित्व किया, जैसा कि भविष्यद्वक्ता सदैव करते हैं। इसी कारण, उसे पूर्व में ही सूचित किया गया कि पुस्तक पहले मीठी होगी और फिर कड़वी। मिलेराइटों को यह बात पूर्व से ज्ञात नहीं थी, परन्तु एक लाख चवालीस हज़ार के लिए इसे जानना अनिवार्य है।

पहले स्वर्गदूत के संदेशवाहक के रूप में, मिलर छोटी पुस्तक को खाने वाले का प्रमुख प्रतीक है। एक अनाज पीसने वाले के रूप में उसे गेहूँ को भूसी से अलग करना था, फिर अनाज को पीसकर आटा बनाना, और वह रोटी तैयार करना जो खाई जानी थी। उसने वह रोटी अपने कक्ष के मध्य में रखकर और जो कोई चाहे उन्हें 'आओ और देखो' कह कर बाँटी। परन्तु उस व्यक्ति के प्रतीक के रूप में जिसने स्वर्गदूत के हाथ से पुस्तक ली, मिलर, यूहन्ना के समान, पहले स्वर्गदूत के आरम्भिक दिनों की अपेक्षा वह तीसरे स्वर्गदूत के उत्तरकाल को अधिक संबोधित कर रहा है। अपने स्वप्न में वह यह सूचित करते हुए आरम्भ करता है कि उसे अपना संदेश एक अदृश्य हाथ के द्वारा मिला। प्रकाशितवाक्य 10 में पहला स्वर्गदूत अपने हाथ में एक छोटी पुस्तक रखता है, परन्तु प्रकाशितवाक्य 18 का स्वर्गदूत—जो 1840 के अल्फा का ओमेगा है—उसके हाथ में कोई पुस्तक प्रदर्शित नहीं है, और वही वह पुस्तक है जो मिलर को मिली—एक अदृश्य हाथ से मिली पुस्तक। मिलर का 'आओ और देखो' 9/11 है, और 'धूल-झाड़ने वाला ब्रश' धारण किए हुए पुरुष का 'आओ और देखो' रविवार का कानून है।

अल्फा और ओमेगा "आओ और देखो" के बीच दूसरे स्वर्गदूत का संदेश है, क्योंकि अल्फा 9/11 है, जो अध्याय अठारह का पद 1 है, और पद 2 दूसरा स्वर्गदूत है, जो पद 3 पर समाप्त होता है, जो रविवार का विधान और ओमेगा "आओ और देखो" है। मिलर के स्वप्न में दूसरा स्वर्गदूत और बाबुल का पतन "scatter" शब्द के सात बार प्रयोग द्वारा निरूपित है, जबकि समग्र कथानक यह दर्शाता है कि सत्य त्रुटि से पराजित हो रहा है।

पहला और तीसरा स्वर्गदूत क्रमशः 11 अगस्त, 1840 और 9/11 को उस संदेश के साथ उतरे जिसे ग्रहण कर खाया जाना चाहिए। ये दोनों तिथियाँ प्रकाशितवाक्य के अठारहवें अध्याय के प्रथम पद के अनुरूप हैं।

आधारभूत सत्य मई 1842 में प्रकाशित किए गए, और 1843 का पायनियर चार्ट हबक्कुक की दो तालिकाओं का अल्फा था। 2012 में हबक्कुक की तालिकाएँ प्रकाशित की गईं, जो मई 1842 के अनुरूप थीं।

मिलरवादियों ने 19 अप्रैल, 1844 को अपनी पहली निराशा का अनुभव किया, जो 18 जुलाई, 2020 का पूर्वरूप ठहरता है। उसी समय दूसरा स्वर्गदूत आ पहुँचा, और उसका आगमन प्रकाशितवाक्य अध्याय 18 के पद 2 के साथ संरेखित था। उस निराशा ने पहले स्वर्गदूत के अंत को चिह्नित किया। वहीं दूसरा स्वर्गदूत आया, और कुँवारियों के दृष्टान्त में विलंब का समय आरंभ हुआ। पहले स्वर्गदूत का इतिहास दूसरे के इतिहास के समानांतर चलना है, और जब इसे इस प्रकार लागू किया जाता है, तो दूसरे स्वर्गदूत का आगमन 1840 तथा 9/11 में पहले स्वर्गदूत के आगमन के साथ संरेखित होता है।

प्रतीक्षा-काल 9/11 पर आ पहुँचा, जिसका प्रतिरूप 19 अप्रैल, 1844 था। 9/11 पर इस्लाम की चार पवनें मुक्त कर दी गईं, और फिर रोककर रखी गईं। यूहन्ना की वे चार पवनें यशायाह की प्रचण्ड पवनें हैं, और भविष्यवाणी की पूर्वी पवन हैं, और मुहर लगानेवाला स्वर्गदूत पूर्व से उदय होता है। जब वह उदय होता है, तो वह बहन व्हाइट के अनुसार चार बार इस प्रकार पुकारता है: "थामे रखो, थामे रखो, थामे रखो, थामे रखो।" दूसरे स्वर्गदूत के आगमन से आरम्भ होने वाला प्रतीक्षा-काल इस प्रकार दर्शाया गया है कि एक लाख चवालीस हज़ार मुहरबंद किए जाने तक चार पवनें रोककर रखी जाती हैं।

प्रथम निराशा के पश्चात, सैमुअल स्नो को आधी रात की पुकार के संदेश का संकलन करने के लिए प्रेरित किया गया, और इस प्रकार वह जुलाई 2023 में जंगल में पुकारनेवाले के स्वर का प्रतिरूप सिद्ध हुआ।

एक्सेटर शिविर-सभा में, तेल की कसौटी के आधार पर कुँवारियों का जो पृथक्करण हुआ, उसने वाचा के दूत के कार्य के अनुरूप मिलराइटों को शोधित और पवित्र किया। एक्सेटर शिविर-सभा ने मुद्रांकन का प्रतिनिधित्व किया, क्योंकि तत्पश्चात् कार्य ज्वारीय लहर की भाँति, या एक पराक्रमी सेना के समान, आगे बढ़ा, जब तक कि 22 अक्टूबर, 1844 को तीसरा स्वर्गदूत आ पहुँचा। उस इतिहास की कुंजी पृथक्करण है।

जब दूसरे स्वर्गदूत का आगमन होता है, वह अलग करने का कार्य करता है, जैसा कि उसने प्रथम निराशा के समय किया था, और वह 22 अक्टूबर के विभाजन पर समाप्त हुआ। दोनों विभाजनों के मध्य में दूसरे स्वर्गदूत का संदेश प्रचारित किया गया। दूसरे स्वर्गदूत का कार्य एक क्रमिक विभाजन है, जो तेल की अंतिम परीक्षा तक आगे बढ़ता है। तेल की अंतिम परीक्षा तीसरे स्वर्गदूत के लिटमस परीक्षण की ओर ले जाती है। वह लिटमस परीक्षण यीशु के लिए क्रूस था; और गतसमनी का उद्यान—अर्थात् 'तेल-कोल्हू का उद्यान'—क्रूस के उस लिटमस परीक्षण से पहले आया, और कन्याओं के तेल की परीक्षा 1844 के बंद द्वार से पहले हुई।

प्राचीन इस्राएल के लिए अंतिम परीक्षा—जिसके पश्चात् न्याय हुआ—दसवीं परीक्षा थी। तब उन्हें मरुभूमि में मरने के लिए ठहराया गया। चाहे स्थान कादेश हो, गथसमनी हो, या एक्सेटर; न्याय से पूर्व होने वाली वह अंतिम परीक्षा—जिसमें दो वर्ग अलग किए जाते हैं—2023 के पश्चात् की एक अंतिम परीक्षा की पहचान कराती है, जो रविवार कानून के बंद-द्वार न्याय से पहले आती है। वह अंतिम परीक्षा मुद्रांकन है। अंतिम या आखिरी परीक्षा एक प्रथम परीक्षा का संकेत करती है।

सन् 2023 में, जब यहूदा के गोत्र के सिंह ने अपने हाथ को हटाकर उस दर्शन की मोहर खोल दी, जो विलंबित होना था, तब विलंब का समय समाप्त हो गया। तत्पश्चात् सैमुअल स्नो का कार्य आरंभ हुआ।

यदि हम प्रथम और द्वितीय स्वर्गदूतों की अवधियों को परस्पर समानांतर रखें, तो उनसे एक ऐसे स्वर्गदूत के अवतरण की पहचान होती है, जो एक संदेश लेकर अवतरित होता है; यह संदेश 'संदेश को लो और खाओ' की आज्ञा पर उनकी प्रतिक्रिया के द्वारा परमेश्वर की प्रजा की परीक्षा लेता है। तत्पश्चात् वह मौलिक संदेश लोक-समक्ष रखा जाता है, जब तक कि वह मौलिक संदेश विफल न हो जाए। तब तृतीय स्वर्गदूत आता है। तृतीय स्वर्गदूत की अवधि वे उन्नीस वर्ष हैं, जो ईसा पूर्व 742 से 723 तक के ओमेगा उन्नीस वर्ष थे।

1844 से 1863 तक की अवधि, और ईसा-पूर्व 742 से 723 तक की अवधि, परस्पर समानांतर हैं, और प्रथम तथा द्वितीय स्वर्गदूतों की अवधियों के भी समानांतर हैं। भविष्यसूचक इतिहास की वे चार रेखाएँ 9/11 से लेकर रविवार-पालन के कानून तक की अवधि के साथ संरेखित होती हैं। वे पाँचों रेखाएँ मिलर के अल्फ़ा "आओ और देखो" और मसीह के ओमेगा "आओ और देखो" का इतिहास हैं।

चार गुना सात

उचित रूप से समझे जाने पर, लैव्यव्यवस्था 26 "सात गुना" का चार बार उल्लेख करती है, और "सात गुना" मिलर तथा उनके संदेश का एक प्रतीक है। 1842 में, "सात गुना" के विषय में मिलर की समझ 1843 के चार्ट पर अंकित की गई, जिसके विषय में बहन व्हाइट कहती हैं, "यह प्रभु के हाथ से निर्देशित था," और "इसे बदला नहीं जाना चाहिए।" सात वर्ष बाद 1849 में मिलर का निधन हो गया, और सात वर्ष बाद "सात गुना" के संदेश को हाइरम एडसन ने अभिलेख में दर्ज किया, और सात वर्ष बाद उसे अस्वीकार कर दिया गया।

सन् 1842 में हबक्कूक की पहली तालिका प्रकाशित हुई।

1849 में 1843 के चार्ट पर प्रस्तुत "सात समय" के अल्फ़ा संदेशवाहक का निधन होता है।

1856 में 1850 के चार्ट पर "सात समय" के ओमेगा संदेशवाहक की उपेक्षा की जाती है।

1863 में हबक्कूक की दो पट्टिकाओं को अस्वीकार कर दिया गया, और 1863 का चार्ट प्रकाशित किया गया।

प्रारम्भ में एक दिव्य आरेख प्रकाशित किया गया है और अंत में एक मानवीय आरेख प्रकाशित किया गया है। मध्य में दो दूत चिन्हित किए गए हैं, क्योंकि द्वितीय संदेश सदैव द्विगुणित रहता है।

प्रथम स्वर्गदूत

सन् 1842 में हबक्कुक की पहली तालिका प्रकाशित हुई।

द्वितीय स्वर्गदूत

1849 में 1843 के चार्ट का वह वृद्ध संदेशवाहक निधन हो जाता है।

1856 में 1850 के चार्ट का नया दूत उपेक्षित किया जाता है।

तृतीय स्वर्गदूत

1863 में संदेश को अस्वीकार कर दिया गया और 1863 का चार्ट प्रकाशित किया गया।

यह इक्कीस-वर्षीय कालखंड 'सात समय' के चार प्रतीकों का प्रतिनिधि है, और इसमें प्रत्येक के बीच सात-सात वर्षों का समान अंतराल है। अल्फा संदेश प्रकाशित किया जाता है (1842), अल्फा संदेशवाहक का निधन होता है (1849), ओमेगा संदेशवाहक की उपेक्षा की जाती है (1856), और ओमेगा संदेश अस्वीकार किया जाता है (1863)—यह क्रम 2012; 18 जुलाई, 2020; 2023; तथा शीघ्र आने वाले रविवार के क़ानून का प्रतिरूप है। 1849 में मिलर की मृत्यु 18 जुलाई, 2020 के साथ मेल खाती है। संदेशवाहक और संदेश, दोनों का 2023 में पुनरुत्थान हुआ। अब ओमेगा संदेश की मुहर खोली जा रही है, और इसके बाद 1863 का रविवार का क़ानून आता है।

मिलरवादी आंदोलन में संदेश स्थापित किया गया, और तत्पश्चात दूत की मृत्यु हो गई। समांतर आंदोलन में संदेश स्थापित किया गया, और फिर संदेश मृत हो गया। संदेश का 1856 और 2023 में पुनरुत्थान हुआ। 1863 का चिह्न धर्मत्याग है, और उसके समकक्ष रविवार के कानून के समय का चिह्न विजय है। 1863 के धर्मत्याग और रविवार के कानून के समय उसके समकक्ष की विजय से पूर्व, 1856 के "सात बार" के शिरोशिला-स्वरूप ओमेगा-प्रकाश की मुहर का उद्घाटन प्रतिपादित किया जा रहा है, जैसा कि 2023 से होता आ रहा है।

हम अगले लेख में जारी रखेंगे।

विलियम मिलर: 1782-1849

विलियम: "इच्छा" और "शिरस्त्राण" — "दृढ़प्रतिज्ञ रक्षक", "निश्चयी संरक्षक", अथवा "दृढ़ इच्छाशक्ति वाला योद्धा।"

Miller: वह व्यक्ति जो मिल का संचालन करता है; विशेषतः ऐसी मिल का जो अन्न को पीसकर आटा बनाती है.

दृढ़-इच्छाशक्ति-संपन्न योद्धा

एक धर्मनिष्ठ, निष्कपट-हृदय किसान, जिसके मन में पवित्र शास्त्रों की दैवीय अधिकारिता के प्रति संदेह उत्पन्न कर दिया गया था, तथापि जो सत्य को जानने की सच्ची इच्छा रखता था, वही व्यक्ति था जिसे परमेश्वर ने विशेष रूप से इस हेतु चुना कि वह मसीह के दूसरे आगमन की घोषणा का नेतृत्व करे। अन्य अनेक सुधारकों की भाँति, विलियम मिलर ने अपने प्रारंभिक जीवन में दरिद्रता से संघर्ष किया और इस प्रकार उसने उद्यम तथा आत्मत्याग के महान पाठ सीखे। जिस परिवार से वह उत्पन्न हुआ था, उसके सदस्य स्वाधीन, स्वातंत्र्य-प्रिय मनोभाव, सहनशक्ति, और उत्कट देशभक्ति से विशिष्ट थे—ये गुण उसके अपने चरित्र में भी प्रमुख थे। उसके पिता क्रान्ति

की सेना में एक कप्तान थे, और उस उथल-पुथल भरे काल के संघर्षों और दुःखों में जो बलिदान उन्होंने किए, उन्हीं में मिलर के प्रारंभिक जीवन की तंग परिस्थितियों का स्रोत खोजा जा सकता है।

उसका शारीरिक गठन सुदृढ़ था, और बचपन में भी उसने सामान्य से अधिक बौद्धिक सामर्थ्य के प्रमाण दिए। जैसे-जैसे वह बड़ा हुआ, यह और अधिक स्पष्ट होता गया। उसका मस्तिष्क सक्रिय और सुविकसित था, और उसमें ज्ञान की तीव्र पिपासा थी। यद्यपि उसे महाविद्यालयीय शिक्षा के लाभ प्राप्त नहीं हुए, तथापि अध्ययन-प्रेम तथा सावधानीपूर्वक चिंतन और सूक्ष्म समालोचना की आदत ने उसे सुदृढ़ निर्णय-शक्ति और व्यापक दृष्टि वाला पुरुष बना दिया। उसका नैतिक चरित्र निष्कलंक था और उसकी प्रतिष्ठा ईर्षणीय; सत्यनिष्ठा, मितव्ययिता और परोपकारिता के लिए वह सामान्यतः आदृत था। ऊर्जा और लगन के बल पर उसने प्रारंभिक आयु में ही यथेष्ट संपत्ति अर्जित कर ली, तथापि उसके अध्ययन की आदतें यथावत बनी रहीं। उसने नागरिक और सैन्य, दोनों प्रकार के अनेक पद सम्मानपूर्वक संभाले, और धन तथा मान-सम्मान के मार्ग उसके लिए व्यापक रूप से खुले हुए प्रतीत होते थे। *The Great Controversy*, 317.

परमेश्वर का ज्ञान मानसिक परिश्रम के बिना, और यह बुद्धि माँगे बिना कि आप सत्य के शुद्ध अन्न से उस भूसी को अलग कर सकें जिसके द्वारा मनुष्यों और शैतान ने सत्य के सिद्धांतों को गलत रूप में प्रस्तुत किया है, प्राप्त नहीं किया जा सकता। शैतान और उसके मानव सहयोगियों के गठबंधन ने त्रुटि की भूसी को सत्य के गेहूँ के साथ मिला देने का प्रयत्न किया है। हमें परिश्रमपूर्वक छिपे हुए खजाने की खोज करनी चाहिए, और स्वर्ग से बुद्धि माँगनी चाहिए ताकि हम मानवीय गढ़ों को दैवी आज्ञाओं से पृथक कर सकें। पवित्र आत्मा उन महान और बहुमूल्य सत्यों के खोजी की सहायता करेगा, जो उद्धार की योजना से संबंधित हैं। मैं सबके मन में यह बात दृढ़तापूर्वक बिठाना चाहता हूँ कि शास्त्रों का सरसरी पठन पर्याप्त नहीं है। हमें खोज करनी ही होगी, और इसका अर्थ है कि वचन में निहित हर बात को आचरण में लाना। जैसे खनिक सोने की शिराओं को खोजने के लिए उत्सुकतापूर्वक पृथ्वी का अन्वेषण करता है, वैसे ही आपको परमेश्वर के वचन का अन्वेषण करना है उस छिपे हुए खजाने के लिए, जिसे शैतान ने बहुत समय से मनुष्य से छिपाए रखने का प्रयत्न किया है। प्रभु कहते हैं, 'यदि कोई उसकी इच्छा को करना चाहे, तो वह शिक्षा के विषय में जान जाएगा।' यूहन्ना 7:17, संशोधित संस्करण।

परमेश्वर का वचन सत्य और ज्योति है, और वह तुम्हारे पाँव के लिये दीपक है, जो तुम्हें परमेश्वर के नगर के फाटकों तक जाने वाले मार्ग में प्रत्येक पग पर मार्गदर्शन करता है। इसी कारण शैतान ने उस मार्ग में बाधा डालने के लिए, जो प्रभु के छोड़ाए हुए चालने के लिए तैयार किया गया है, घोर प्रयास किए हैं। तुम्हें अपनी धारणाएँ बाइबल पर नहीं थोपनी हैं, और अपने मतों को वह केंद्र नहीं बनाना है जिसके चारों ओर सत्य परिक्रमा करे। तुम्हें अपनी धारणाएँ अनुसंधान के द्वार पर रखकर अलग कर देनी हैं, और दीन, विनम्र हृदयों के साथ, अपने आप को मसीह में छिपाए हुए, गंभीर प्रार्थना के साथ, तुम्हें परमेश्वर से बुद्धि माँगनी है। तुम्हें यह अनुभव होना चाहिए कि तुम्हें परमेश्वर की प्रकट की हुई इच्छा को जानना ही है, क्योंकि यह तुम्हारे व्यक्तिगत, शाश्वत कल्याण से संबंध रखती है। बाइबल एक मार्गदर्शिका है, जिसके द्वारा तुम अनन्त जीवन का मार्ग जान सकते हो। तुम्हें सबसे बढ़कर यह अभिलाषा रखनी चाहिए कि तुम प्रभु की इच्छा और उसके मार्गों को जानो। तुम इस उद्देश्य से खोज न करो कि ऐसे शास्त्रवचन मिल जाएँ जिन्हें तुम घुमा-फिराकर अपने सिद्धांतों को सिद्ध करने के लिए उपयोग कर सको; क्योंकि परमेश्वर का वचन घोषित करता है कि ऐसा करना शास्त्रों को तोड़-मरोड़ कर अपने ही विनाश का कारण बनना है। तुम्हें अपने को हर प्रकार के पूर्वाग्रह से रिक्त करना चाहिए, और प्रार्थना की भावना में परमेश्वर के वचन के अनुसंधान में आना चाहिए। रिच्यू एंड हेराल्ड, 11 सितंबर, 1894.

विलियम मिलर का जन्म मैसाचुसेट्स के पिट्सफील्ड में हुआ था। उनकी औपचारिक शिक्षा केवल अठारह महीनों की थी, परन्तु वे अपने प्रबल पठन-अभ्यास के माध्यम से स्वशिक्षित हो गए। उन्होंने बहुत शीघ्र ही लेखन आरम्भ किया, कविता रची और डायरी रखी। उनके पठन ने उन्हें ऐसे अविश्वासी लेखकों से परिचित कराया जिन्होंने उन्हें दैववाद की दिशा में प्रभावित किया। अपने बीसवें दशक के उत्तरार्ध में वे शांति मजिस्ट्रेट बने और 1812 के युद्ध में लड़े। इस संघर्ष के दौरान हुए कई अनुभवों ने उनके मन को एक व्यक्तिगत परमेश्वर की ओर मोड़ दिया। 1816 तक वे परिवर्तित हो चुके थे, और उन्होंने गंभीरता से बाइबल का अध्ययन आरम्भ किया।

उन्होंने लिखा, 'पवित्र शास्त्र... मेरे लिए आनंद का विषय बन गए, और यीशु में मैंने एक मित्र पाया।'

1818 तक भविष्यवाणियों के अध्ययन में वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि यीशु 'लगभग 1843' में लौटेंगे। 1831 में, ऐसा करने के लिए गहन दृढ़ विश्वास और ईश्वरीय प्रबंध के मार्गदर्शन के अंतर्गत, उन्होंने छोटे-छोटे समूहों में सार्वजनिक रूप से अपने अध्ययन प्रस्तुत करना आरम्भ किया। 1839 में प्रमुख संपादक जे. वी. हाइम्स से भेंट के बाद, बड़े नगरों में विशाल समूहों के समक्ष प्रचार करने का मार्ग खुल गया। यद्यपि बहुतों ने विरोध किया, तथापि उनके उपदेश, और उन अन्य लोगों के भी जिन्होंने आगमन का संदेश ग्रहण किया, ने महत्वपूर्ण प्रभाव डाला; यहाँ तक कि 100,000 तक लोगों ने मसीह के शीघ्र आगमन के विश्वास को स्वीकार किया। एलेन हार्मन ने मार्च 1840 में मेन के पोर्टलैंड में, जब वह बारह वर्ष की थीं, उन्हें सुना। उन्होंने बताया, "श्री मिलर ने भविष्यवाणियों का ऐसी सटीकता से अनुसरण और विवेचन किया कि श्रोताओं के हृदयों में दृढ़ विश्वास उत्पन्न हो गया। उन्होंने भविष्यवाणी के कालखंडों पर ठहरकर विचार किया और अपने मत को सुदृढ़ करने के लिए अनेक प्रमाण प्रस्तुत किए। तब जो लोग तैयार नहीं थे, उनके प्रति उनकी गंभीर और शक्तिशाली आह्वान और चेतावनियाँ भीड़ को मानो मंत्रमुग्ध किए रखती थीं।" Life Sketches, 20.